R
S
V
L
1855

Δ2.864
N57
1855

॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला
१०१

॥ श्रीः ॥

ग्रहगोचरफलम्

'शिशुतोषिणी' टीकोपेतम्

चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, वाराणसी

॥ श्रीः ॥

हरिदास-संस्कृत-ग्रन्थमाला

१०१

॥ श्रीः ॥

ग्रहगोचरफलम्

'शिशुतोषिणी' भाषाटीकोपेतम्

रचयिता-

दैवज्ञ पं० श्री हरिहरप्रसादव्यासः

मिरजापुरमण्डलान्तर्गत 'आही' ग्रामस्थसंस्कृतपाठशालाध्यापकः

प्रकाशकः—

चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, वाराणसी-१

द्वितीयावृत्तिः] मूल्यं ≡) [ई० १९५७

प्राक्कथन

ज्योतिषशास्त्र वेद के षडङ्गों का नेत्र है अतः जिस प्रकार एक अणुमात्र लघु तिनके से आंखों में महाकष्ट उत्पन्न हो जाता है, उसी प्रकार ज्योतिषाध्ययन में जरा भी असावधानी करने से उसकी दिव्य दृष्टि में मन्दता आ जाती है। यही कारण है कि उच्च वर्गीय छात्र भी ज्योतिष के साधारण विषयों के गूढतम रहस्य की जानकारी से परे रह जाते हैं। ग्रहगोचर के राशिविचार से ही मनुष्य के आजीवन का फल ज्ञात होता है—जन्माङ्ग और ताजिक की भाँति नहीं। इसका वर्णन मुहूर्त के सभी ग्रन्थों में है, पर भ्रम की अधिकता एवं छात्रों की ज्ञानोत्सुकता के कारण मैंने इसे अतिसरल रूप में एकत्रित करके इसकी 'शिशुतोषिणी' नामक सरल हिन्दी टीका भी करदी है। आशा है इस से छात्रों व जनसाधारणों का भी अवश्य लाभ होगा।

—oo:o:oo—

Δ2;864
N57

समर्पणम्

श्रीरामचन्द्रविमलेषु सरोरुहेषु हस्तेषु तापशमनेषु सुखप्रदेषु।
श्रीजानकीकरकुशेशयसंग्रहेषु भक्तार्तिनाशनकरेषु समर्पणं हि॥

Δ2;864
N57

विनीतः—

—हरिहरप्रसादव्यासः

1855

KENDRIYA SANSKRIT VIDYA PEETHA
TIRUPATI.
LIBRARY.

* श्रीमङ्गलमूर्तये नमः *

ग्रहगोचरफलम्

'शिशुतोषिणी' टीकोपेतम्



मङ्गलाचरणम्—

प्रणम्यादौ गणाधीशं शङ्करं शारदां गुरुम् ।
लोकानामुपकाराय कुरुते ग्रहनिर्णयम् ॥ १ ॥

श्रीगणेश जी, श्रीशंकर जी, श्रीसरस्वती जी और श्रीगुरु जी को नमस्कार करके जनसाधारण के उपकारार्थ इस ग्रहनिर्णय को बनाता हूँ॥

सूर्यफलम्—

जन्मराशौ रवौ पन्था द्वितीये हानिरेव च ।
तृतीये धनमाप्नोति चतुर्थे रोगवर्धनम् ॥ २ ॥
दैन्यं च पञ्चमे भूयात् षष्ठे सूर्ये सुखी भवेत् ।
गमनं सप्तमे सूर्ये पीडा चैवाष्टमे रवौ ॥ ३ ॥
नवमे पापबुद्धिश्च दशमे सौख्यदायकः ।
एकादशे रवौ लाभः पीडासूर्ये च द्वादशे ॥ ४ ॥

सूर्य यदि जन्मराशि में हों तो यात्रा, दूसरे में हों तो हानि, तीसरे में हों तो धनप्राप्ति, चौथे में हों तो रोग, पाँचवें में हों तो दीनता, छठे में हों तो सुखी, सातवें में हों तो यात्रा, आठवें में हों तो पीड़ा, नवम में हों तो पापबुद्धि, दशम में हों तो सुख, ग्यारहवें में हों तो लाभ और बारहवें में हों तो पीड़ा होती है ॥ २-४ ॥

चन्द्रफलम्—

जन्मराशौ शशी पुष्टिः द्वित्रिस्थाने धनप्रदः ।
चतुर्थे रोगदाता च पञ्चमे सुखदः शशी ॥ ५ ॥

षष्ठे लाभप्रदश्चेन्दुस्सप्तमे धनवर्धकः ।
क्लेशश्चैवाष्टमे मानं नवमे दशमे शुभम् ॥ ६ ॥
लाभश्चैकादशे चन्द्रे पीडा च द्वादशे भवेत् ।

जन्मराशि में चन्द्रमा हों तो पुष्टि, दूसरे और तीसरे में हों तो धन, चौथे में हों तो रोग, पांचवें में हों तो सुख, छठे में हों तो लाभ, सातवें में हों तो धन, आठवें में हों तो क्लेश, नवें में हों तो मान, दशवें में हों तो शुभ, ग्यारहवें में हों तो लाभ और बारहवें में हों तो पीड़ा होती है ॥

भौमफलम्—

मङ्गले जन्मराशौ च भयं हानिर्द्वितीयके ।
तृतीये च श्रियं दद्याच्चतुर्थे वैरवर्धकः ॥ ७ ॥
पञ्चमे वर्धते रोगं लाभो भौमे च षष्ठके ॥ ८ ॥
सप्तमे च तनुः कार्श्यः पापबुद्धिश्च वाष्टमे ।
मङ्गले नवमे रोगः सुखं च दशमे भवेत् ॥ ९ ॥
भौमे चैकादशे लाभः द्वादशे शोकवर्धनम् ।

जन्मराशि में मंगल हों तो भय, दूसरे में हों तो हानि, तीसरे में हों तो लक्ष्मी, चौथे में हों तो वैर, पांचवें में हों तो रोग, छठे में हों तो लाभ, सातवें में हों तो क्लेश, आठवें में हों तो पाप, नवें में हों तो रोग, दशवें में हों तो सुख, ग्यारहवें में हों तो लाभ और बारहवें में हों तो शोक होता है ॥ ७-९ ॥

बुधफलम्—

जन्मराशौ यदा चान्द्रिर्बन्धनं च तदा भवेत् ॥ १० ॥
द्वितीये च बुधे लाभः तृतीये च भयं भवेत् ।
चतुर्थे च धनं प्राप्तं शोको भवति पञ्चमे ॥ ११ ॥
सुलाभश्च बुधे षष्ठे व्यथा च सप्तमे बुधे ।
अष्टमे धनमाप्नोति रोगोऽपि नवमे बुधे ॥ १२ ॥

दशमे च सुखं प्राप्तं लाभश्चैकादशे भवेत्।
द्वादशस्थे बुधे शोको भवत्येव न संशयः॥ १३॥

बुध जन्मराशि में हों तो बन्धन, दूसरे में लाभ, तीसरें में भय, चौथे में धन, पाँचवें में शोक, छठे में लाभ, सातवें में पीड़ा, आठवें में धन, नवें में रोग, दशवें में सुख, ग्यारहवें में लाभ और बारहवें में हों तो शोक होता है, इसमें संशय नहीं॥ १०-१३॥

गुरुफलम्—

जन्मराशौ सुराचार्ये तदा चापि भयं भवेत्।
द्वितीये च धनं प्राप्तं रोगप्राप्तस्तृतीयके॥ १४॥
चतुर्थे धनहानिश्च लाभश्च पञ्चमे गुरौ।
षष्ठे रोगः मुनौ सौख्ये पीडा चैवाष्टमे गुरौ॥ १५॥
नवमे वर्धते मानं दैन्यं च दशमे ध्रुवम्।
एकादशे भवेत् सौख्यं रोगश्च द्वादशे गुरौ॥ १६॥

बृहस्पति जन्मराशि में हों तो भय, दूसरे में धन, तीसरे में रोग, चौथे में धन, पांचवें में लाभ, छठे में रोग, सातवें में सुख, आठवें में पीड़ा, नवें में मानवृद्धि, दशवें में दीनता, ग्यारहवें में सुख और बारहवें में हों तो रोग होता है॥ १४-१६॥

शुक्रफलम्—

जन्मराशौ सुखं शुक्रे द्वितीये च तथा सुखम्।
तृतीये वर्धते वित्तं चतुर्थे धनवर्धनम्॥ १७॥
सौख्यं च पञ्चमे रोगः षष्ठे पीडा मुनौ भृगौ।
विपत्तिश्चाष्टमे शुक्रे सुखं च नवमे भवेत्॥ १८॥
दशमे धर्मलाभश्च दुःखं चैकादशे भृगौ।
द्वादशे धनमाप्नोति स्थिते दैत्यपुरोहिते॥ १९॥

शुक्र जन्मराशि में या दूसरे में हों तो सुख, तीसरे अथवा चौथे में

धन-वृद्धि, पांचवें में सौख्य, छठे में रोग, सातवें में पीड़ा, आठवें में विपत्ति, नवें में सुख, दशवें में धर्मलाभ, ग्यारहवें में सुख और बारहवें में हों तो धन का लाभ होता है ॥ १७–१९ ॥

शनिफलम्—

जन्मराशौ दिवानाथ-सूनौ संस्थे भयं भवेत् ।
द्वितीयस्थे शनौ शोकः शनौ लाभस्तृतीयके ॥ २० ॥
चतुर्थे च भवेत् पीडा हानिश्च पञ्चमे भवेत् ।
सुखं षष्ठे शनौ पीडा शनौ रोगोऽष्टमे ध्रुवम् ॥ २१ ॥
नवमे पापबुद्धिः स्याच्छनौ च दशमे शुभम् ।
एकादशे शनौ लाभः क्लेशोऽपि द्वादशे शनौ ॥ २२ ॥

सूर्य-पुत्र (शनि) जन्मराशि में हों तो भय, दूसरे में शोक, तीसरे में लाभ, चौथे में पीड़ा, पांचवें में हानि, छठे में सुख, सातवें में पीड़ा, आठवें में रोग, नवें में पाप, दशवें में शुभ, ग्यारहवें में लाभ और बारहवें में हों तो दुःख होता है ॥ २०–२२ ॥

राहुफलम्—

जन्मराशौ यदा राहुस्तदा हानिकरो भवेत् ।
द्वितीये च भवेद्धानिर्धनं प्राप्तं तृतीयके ॥ २३ ॥
चतुर्थे च तमः शोको हानिरेव तु पञ्चमे ।
सुखं षष्ठे शनौ पीडा शमो रोगोऽष्टमे भवेत् ॥ २४ ॥
नवमे पापबुद्धिः स्याद् दशमे च शुभं भवेत् ।
एकादशे भवेल्लाभो राहौ पीडा च द्वादशे ॥ २५ ॥

राहु जन्मराशि में या दूसरे में हों तो हानि, तीसरे में धन, चौथे में शोक, पांचवें में हानि, छठे में सुख, सातवें में पीड़ा, आठवें में रोग, नवें में पापबुद्धि, दशवें में शुभ, ग्यारहवें में लाभ और बारहवें में हों तो क्लेश होता है ॥ २३–२५ ॥

केतुफलम्—

जन्मराशौ यदा केतुर्हानिरेव प्रजायते।
द्वितीये वित्तनाशं च तृतीये लाभवर्धनम् ॥ २६ ॥
चतुर्थे जायते पीडा शोको भवति पञ्चमे।
षष्ठे च धनमाप्नोति हानिरेव तु सप्तमे ॥ २७ ॥
पीडाऽष्टमे यदा केतुर्नवमे दैन्यमेव च।
दशमैकादशे लाभः पीडा भवति द्वादशे ॥ २८ ॥

केतु जन्मराशिमें हों तो हानि, दूसरे में धनका नाश, तीसरे में लाभ, चौथे में पीड़ा, पांचवें में शोक, छठे में धन, सातवें में हानि, आठवें में पीड़ा, नवें में दीनता, दशवें तथा ग्यारहवें में लाभ और बारहवें में हों तो पीड़ा होती है ॥ २६-२८ ॥

घातचन्द्रः—

चन्द्रभूत-ग्रहा-नेत्रा-रसा-दिग्-वह्नि-सागराः।
वेदा-वसु-शिवादित्या-घात-चन्द्राः प्रकीर्तिताः ॥ २९ ॥
चन्द्राष्टशैलानवषट्गुणाब्धिर्नेत्रे दशैकादशभूतसूर्याः।
मेषादिराशौ खलु कालचन्द्रः स्त्रीजन्मराशेस्तु विलोकनीयः ॥३०॥

पुरुष के मेषादि राशियों के १।५।९।२।६।१०।३।७।४।८।११।१२ ये घात चन्द्रमा हैं। जैसे मेषराशि वाले को जन्मराशि का और वृषराशि वाले को सिंह राशि का। स्त्री की मेषादिराशि के (घात) चन्द्र १।८।७।९।६।३। ४।२।१०।११।५।१२ इन स्थानों पर प्राप्त होने से होते हैं(१) ॥ २९-३० ॥

चन्द्रपरिहारः—

शुभांशेऽधिमित्रांशके जीवदृष्टः, शुभो मध्ययुक्तेक्षितो नो खलानाम्।
सिते पक्षतो चन्द्रवीर्ये सपक्षः, शुभोऽथोऽशुभः कृष्णपक्षाद्यवीर्ये ॥

---

(१) पञ्चाद्य त्रियुतः शिरस्य निधनं पृष्ठे नवाष्टस्थितः।
नैराश्यं कुरुते हृदीशनभदिक् जातोऽपि सौख्यं तथा ॥

चन्द्रमा शुभग्रह (बु० गु० शु०) के नवांश में हों और गुरु से देखे जाते हों तो दुष्ट होकर भी शुभ होते हैं, वा अधिमित्र के नवांश में होकर गुरु से देखे जाते हों तो दुष्ट स्थान में रहने पर भी शुभ होते हैं। चन्द्रमा पापग्रह के बीच में हों तो शुभ नहीं होते। चन्द्रमा शुक्लपक्ष में शुभ हैं अतः वह पक्ष शुभ और कृष्णपक्षमें अशुभ हैं अतः वह पक्ष अशुभ होता है ॥ ३१ ॥

शनेः सार्धसप्तवर्षारिष्टः—

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः ।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्यूतो भवेत् ॥ ३२ ॥

शनि बारहवें तथा जन्मराशि पर और दूसरे स्थान में हों तो साढेसाती होती है, ऐसे स्थान में शनि के रहने पर मनुष्य दुःख से युक्त रहता है—कभी सुखी नहीं रहता ॥ ३२ ॥

शनिचरणनिर्णयः—

जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्देरजतस्य पादम् ।
त्रिसप्तदिक्ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टसार्धेष्विह लोहपादम् ॥ ३३ ॥

पहले, छठे और ग्यारहवें में शनि हों तो सुवर्णपाद, दूसरे, पांचवें और नवें में हों तो रजतपाद, तीसरे, सातवें तथा दशवें में हों तो ताम्रचरण और चौथे, आठवें और जहाँ से साढ़ेसाती प्रारम्भ होती है, वहाँ अर्थात् १२ वें में हों तो लोहचरण कहते हैं ॥ ३३ ॥

तृतीयैकादेशे षष्ठे शन्यर्ककुजराहवः ।
चत्वारस्तस्य राज्यं वा शरीरे सौख्यमादिशेत् ॥ ३४ ॥

तृतीय, एकादश और षष्ठ स्थान में यदि शनि, सूर्य, मङ्गल और राहु ये चारों ग्रह बैठे हों तो राज्य अथवा शरीर को विशेष सुख होता है ॥

धन जन्मनि पञ्चमसप्तमगाश्चतुराष्टमद्वादश धर्मयुताः ।
धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः(१) ॥

---

(१) हस्ते नेत्रचतुर्थके शुभफलं वाञ्छा विधत्ते नृणाम् ।
चादौ द्वादश षष्ठकोऽपि तनुते दैन्यं निशानायकः ॥

सूर्य, राहु, शनि और मंगल ये ग्रह यदि २।१।५।७।४।८। १२।९। इन स्थानों में रहें तो धनधान्य तथा सुवर्णों का नाश करते हैं॥ ३५॥

ग्रहाणां स्थितिः गन्तव्यराशिफलं—

मासं शुक्रबुधादित्याः सार्धमासं तु मङ्गलः।
त्रयोदशगुरुश्चैव सपादद्विदिनं शशी॥ ३६॥
राहुरष्टादशान् मासान् त्रिंशन्मासान् शनैश्चरः।
राहुवत् केतुरुक्तस्तु राशिभोगाः प्रकीर्तिताः॥ ३७॥

एकराशि पर शुक्र, बुध और सूर्य एक मास, मंगल डेढ़ मास, बृहस्पति तेरह मास, चन्द्रमा सवा दो दिन, राहु अठारह मास और शनि तीस मास रहते हैं। राहु के समान केतु का भी राशिभोग होता है॥ ३६–३७॥

सूर्यः पञ्चदिनं शशी द्विघटिका भौमोऽष्ट वै वासरम्।
सप्ताहं ह्युशना बुधस्त्रयदिनं मासद्वयं वै गुरुः॥३८॥
षण्मासं रविजस्तथैव सततं स्वर्भानुमासद्वये।
केतोश्चैव तथा फलं परिमितं ज्ञेयं ग्रहाणां फलम्॥३९॥

सूर्य अपनी गन्तव्य राशिका ५ दिन पहले फल देता है एवं चन्द्रमा दो घटी पहले, मंगल ८ दिन पहले, शुक्र ७ दिन पहले; बुध ३ दिन पहले, बृहस्पति दो दिन पहले, शनि छः मास पहले, राहु दो मास पहले और केतु आगामी राशि के दो मास पहले फल देता है। इस प्रकार ग्रहों के फल को जाने॥ ३८–३९॥

राशिप्रवेशे सूर्यारौ मध्ये शुक्रबृहस्पती।
राहुश्चन्द्रशनिश्चान्ते सौम्यश्चैव सदा शुभः॥ ४०॥

सूर्य मंगल राशि के प्रवेश में, शुक्र बृहस्पति राशि के मध्य में, राहु और चन्द्रमा शनि राशि के अन्त में फल देते हैं और बुध सदा ही फल देता है॥ ४०॥

D 2;866 N5T
SANSKRIT LIBRARY
1855

देवब्राह्मणवन्दनाद् गुरुवचः सम्पादनात् प्रत्यहं,
साधूनामपि भाषणाच्छ्रुतिरवः श्रेयः कथाकर्णनात् ।
होमादध्वरदर्शनाच्छुचिमनो भावाज्जपाद् दानतो
नो कुर्वन्ति कदाचिदेव पुरुषस्यैव ग्रहाः पीडनम् ॥ ४१ ॥

देवता और ब्राह्मण के सादर प्रणाम करने से, प्रतिदिन गुरुदेव की आज्ञा पालन करने से, महात्माओं के सदुपदेश और उत्तम कथा के श्रवण करने से तथा हवन, यज्ञदर्शन और शुद्ध मनसे दान, जपादि करने से मनुष्य को ग्रहपीड़ा नहीं होती ।

(इसके अतिरिक्त लाजा, कुटज इत्यादि ओषधियों के स्नान से, ग्रहों के दान, जप से, मणि आदि धारण करने से और दुर्गा, वटुकभैरव, महामृत्युञ्जय, हनुमान जी का एकमुखी-पञ्चमुखी पाठ तथा सुदर्शन कवच एवं पक्षिराज के आराधन से सम्पूर्ण ग्रहजन्य तथा अन्यान्य बाधाओं का भी शमन हो जाता है) ॥ ४१ ॥

दिनदशा—

तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ ४२ ॥
रविचन्द्रौ भौमराहू गुरुमन्दज्ञके सिताः ।
क्रमेणैव दशा ज्ञेया फलं पूर्वोक्तमेव हि ॥ ४३ ॥

तिथि, वार और नक्षत्रों की संख्या को एकत्र कर अपने नामाक्षर की संख्या मिलाकर उसमे ९ का भाग देने से यदि शेष १ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्र, ३ बचे तो मङ्गल, ४ बचे तो राहु, ५ बचे तो बृहस्पति, ६ बचे तो शनि, ७ बचे तो बुध, ८ बचे तो केतु और ९ बचे तो शुक्र की दशा होती है ॥ ४२-४३ ॥

रविदिननखसंख्या चन्द्रमा व्योमबाणैः
क्षितितनयगजाश्वी चन्द्रजे षट्शराश्च ।

R S V L 01855

शनिरसगुणसंख्या वाक्पतिर्नागबाणै-
र्नयनयुगकराहुः सप्ततिः शुक्रसंख्या।
जन्मना विंशतिः सूर्यस्तृतीये दशचन्द्रमाः।
चतुर्थे भौमचाष्टौ च षष्ठे बुधचतुर्थके ॥ ४५ ॥
सप्तमं दशसौरिः स्यान्नवमे चाष्टमे गुरौ।
दशमे राहुविंशत्या तदूर्ध्वं तु भृगोर्दशा ॥ ४६ ॥

फलम्—

पन्थाभोगानुतापश्च सौख्यं पीडा धनं क्रमात्।
नाशः शोकश्च सौख्यं च सूर्यादीनां दशाफलम् ॥ ४७ ॥

एक वर्ष में सूर्यादिग्रहों की (१) दशा जानने का क्रम यह है कि सूर्यजन्मस्थान में रह कर बारह राशियों को भोगता है यथा जन्मस्थान में सूर्य की दशा २० दिन की होती है वह मार्ग चलाती है, चन्द्रमा की ५० दिन की दशामें ३ स्थान के सूर्य १० दिन भोगते हैं और उत्तम प्रकार के भोग का फल देते हैं, मंगल की २८ दिन की दशा में ४ स्थान के ८ दिन सूर्य भोगते हैं और रोग तथा सन्ताप देते हैं, बुध की दशा ५६ दिन में ६ स्थान के ४ दिन सूर्य भोगते हैं और सुख देते हैं, शनि की ३६ दिन की दशामें ७ स्थान के १० दिन सूर्य भोगते हैं और पीड़ा देते हैं, बृहस्पति की ५८ दिन की दशा में ९ स्थान के ८ दिन सूर्य भोगते हैं और धन देते हैं, राहु की ४२ दिन की दशा में १० स्थान के २० दिन सूर्य भोगते हैं और नाना प्रकार की चिन्ता उत्पन्न करते हैं, ७० दिन की शुक्र की दशा को द्वादशस्थ सूर्य पूर्ण भोगते हैं और सुख देते हैं ॥ ४४–४७ ॥

---

(१) सूर्यो वित्तविनाशनं प्रकुरुते धर्मार्थलाभं शशी,
भौमे शस्त्रविघातरोगमरणं सोमात्मजे सम्पदाम्।
मन्दे मन्दमतिं गुरौ च विभवं राहुस्तथा बन्धन-
मेतद्दुष्टफलं समस्तशमनं शुक्रे दशायां गते।

दिनदशा तथा सर्वग्रहदिन दशाओंमे सूर्यदिनभोगफल—

सू.	चं.	मं.	बु.	श.	बृ.	रा.	शु.	ग्रह
२०	५०	२८	५६	३६	५८	४२	७०	दिनदशा संख्या
१	३	४	६	७	९	१०	१२	भाव
२०	१०	८	४	१०	८	२०	७०	सूर्यदिनभोग
पन्था	भोग	अनु-ताप	सौख्य	पीडा	धन	नाश	सौख्य	फल

शरदि नेत्र नवाङ्कधरागते,
हरितिथौ धवलाख्यदले शुचौ ।
हरिहरेण बुधेन विनिर्मितं,
हरिमुदे हि भवेद् ग्रहगोचरम् ॥ ४८ ॥

श्री संवत् १९९६ आषाढ सुदि द्वादशी तिथि को हरिहरप्रसाद व्यास जीने 'शिशुतोषिणी' नाम की टीका सहित ग्रहगोचरफल को बनाया यह भगवान श्रीरामचन्द्रजी की प्रसन्नता के लिये हो ॥ ४८ ॥

इति 'मिरजापुर' मण्डलान्तर्गताहीग्रामस्थदैवज्ञकुलोद्भवदैवज्ञ-भूषणश्रीमातृप्रसादपाण्डेयभ्रातृजश्रीहरिहरप्रसादव्यासेन शिशुतोषिणीनाम्निभाषाटीकान्वितं ग्रहगोचरफलं समाप्तम् ।

KENDRIYA SANSKRIT VIDYAPEETH TIRUPATI LIBRARY

मुद्रक:—विद्याविलास प्रेस, वाराणसी, सं. २०१४

अस्मत्-प्रकाशित-ज्यौतिष-ग्रन्थाः—

१ **ग्रहलाघवम्**। विश्वनाथी संस्कृत टीका तथा 'माधुरी' हिन्दी टीका सहितम् ३॥)
२ **चमत्कारचिन्तामणिः**। सान्वय-'भावप्रबोधिनी' हिन्दी टीका सहितः ॥)
३ **चलनकलन-प्रश्नोत्तरविवरणम्**। ।॥)
४ **चापीयत्रिकोणगणितम्**। विविध-वासना-समलंकृतम् १॥)
५ **जातकपारिजातः**। सुधाशालिनी-विमला संस्कृत-हिन्दी टीका १०), १२)
६ **जातकाभरणम्**। सपरिशिष्ट 'विमला' हिन्दी टीका सहितम् ५)
७ **जातकालङ्कारः**-हरभानुदत्तकृत संस्कृत तथा भावबोधिनी हिन्दी टीकायुतः १)
८ **जैमिनिसूत्रम्**। सोदाहरण 'विमला' संस्कृत हिन्दी टीकाद्वयोपेतम् २)
९ **ताजिकनीलकण्ठी**। गंगाधरमिश्रकृत 'जलदगर्जना' सं. हि. टीकाद्वयोपेता ४॥)
१० **दैवज्ञकामधेनुः**। म० म० पं० अनवमर्शीसंघराजवरेण सङ्कलिता ४॥)
११ **परवलयक्षेत्रम्** ॥) १२ **प्रतिभाबोधकम्**। गंगाधरमिश्रकृत टीका ।॥)
१३ **बीजगणितम्**। जीवनाथी संस्कृत तथा 'विमला' हिन्दी टीकायुतम् ८)
१४ **बीजवासना** (सोपपत्तिक बीजगणित) सम्पादकः ज्यो. आ. गङ्गाधरमिश्रः ॥=)
१५ **बृहज्जातकम्**। सोदाहरणोपपत्ति 'विमला' हिन्दी टीका सहितम् ३॥)
१६ **मुहूर्त्तमार्तण्डः**। 'मार्तण्डप्रकाशिका' संस्कृत हिन्दी टीका सहितः ३)
१७ **रेखागणितम्**। षष्ठाध्याय-परिभाषारूपपञ्चमाध्यायसहितम् हिन्दी टीका ।=)
१८ **रेखागणितम्**। ११-१२ अध्यायौ, श्रीसुधाकरद्विवेदि विरचितम्। १॥)
१९ **रत्नगर्भाचक्रं**। हरिप्रिया भा.टी. ≡) २० **पद्मकोश** भावबोधिनी भा.टी. =)
२१ **लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी**। सोदाहरण-'सुबोधिनी' सं० हि० टीकायुता १।)
२२ **लीलावती**। पं० श्रीसुरलीधरठक्कुर कृत नवीनवासनासहिता ४)
२३ **वनमाला**। 'अमृतधारा' हिन्दी टीबा सहिता ।)
२४ **शिशुबोधः**। विमला भा.टी. ॥=) २५ **योगिनीजातकः**। 'विमला' भा.टी. ।-)
२६ **शीघ्रबोधः**। अनूपमिश्रकृत 'सरला' हिन्दी टीका सहितः १)
२७ **षट्पंचाशिका**। विभा संस्कृत-हिन्दी टीका सहिता ।≡)
२८ **सरलत्रिकोणमितिः**। म. म. वापूदेव शास्त्रि संकलिता सटिप्पणा ४॥)
२९ **सरलरेखागणितम्**। १-२ अध्यायौ, विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदि कृतम् १)
३० **सिद्धान्तशिरोमणिः**। वासनाभाष्य तथा टिप्पणी सहित सम्पूर्णः ६)

प्राप्तिस्थानम्—**चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, वाराणसी-१**

